राष्ट्रध्वज अंक

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा प्रकाशित

सेवा ज्योति

सेवा क्षेत्र को समर्पित, अध्यात्म प्रेरित, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पत्रिका

वर्ष–13 • अंक–1 • जनवरी–मार्च 17 • पौष–फाल्गुन • विक्रमी संवत्–2073

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के प्रकल्पों के सहयोगार्थ
मुम्बई में आयोजित **'मनोज जोशी'** कृत **'चाणक्य'** मंचन–20 नवम्बर 2016

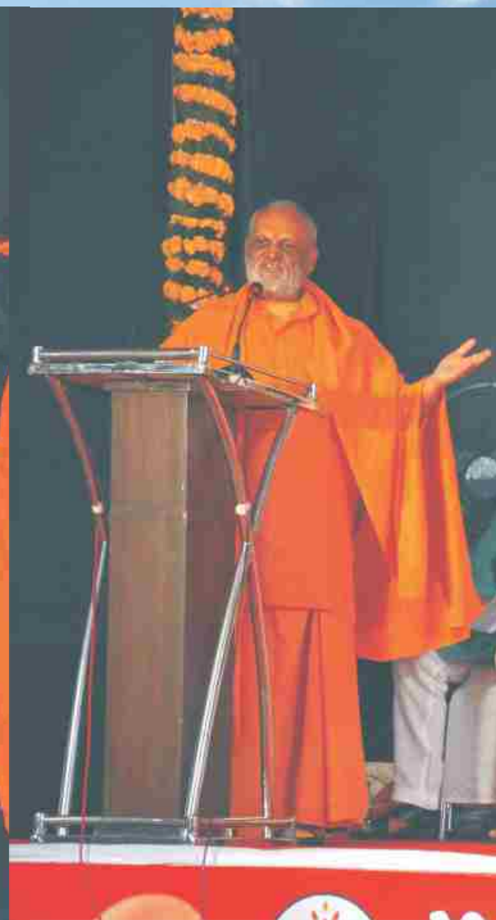

अतिथिगणों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ एवं म.म. स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी महाराज सम्बोधित करते हुए

बायें से :– श्री मोहित कम्बोज जी, (बैठे हुए) श्री आशीष गौतम जी, श्री प्रेम शुक्ला जी, म.म. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज, म.म. स्वामी विश्वेश्वरानन्द गिरी जी महाराज, श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ जी, प्रधानमंत्री–मॉरिशस, महामहिम रामनाथ कोविन्द जी–राज्यपाल, बिहार, मा. सांसद जगदम्बिका पाल जी, श्री उपेन्द्रराय जी

दिव्य प्रेम
सेवा मिशन
सेवा साधना के 21 वर्ष

सेवा ज्योति

सेवा क्षेत्र को समर्पित, अध्यात्म प्रेरित, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पत्रिका

वर्ष : 13, अंक : 1
जनवरी–मार्च 2017
पौष–फाल्गुन
विक्रमी संवत् : 2073
मूल्य प्रति : ₹ 15.00

मुख्य सम्पादक
आशीष गौतम

सम्पादक
संजय चतुर्वेदी

प्रबन्धन
आचार्य बालकृष्ण शास्त्री

विज्ञापन प्रभारी
पंकज सिंह चौहान

आवरण सज्जा
निकुंज

सम्पादकीय कार्यालय
दिव्य प्रेम सेवा मिशन
सेवाकुंज, चण्डीघाट
पो0 कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
पिन कोड – 249408
फोन नं0 – 01334–222211
E-mail : sewa_jyoti@yahoo.com

ड्राफ्ट/चैक 'सेवा ज्योति' हरिद्वार के नाम देय हो।

प्रसार एवं वितरण सम्बन्धी जानकारी हेतु
मो0 9219595552

स्तम्भ	विषय	पृष्ठ सं.
परिसर में आए अतिथियों के उद्गार		4
सम्पादकीय	विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा	5
अंक विशेष	राष्ट्रीय ध्वज यात्रा	6
''	हमारा राष्ट्रध्वज हमारा सम्मान	7
''	भारत के राष्ट्रीय प्रतीक	8
''	आजादी के दीवानों के बलिदान व त्याग की लालिमा इसके रंगों में बसी है	11
''	सेवाकुंज में स्थापित उत्तराखण्ड का प्रथम 100 फीट ऊँचा राष्ट्रीय ध्वज	12
''	तिरंगा : 'राष्ट्रीय ध्वज' से जुड़े रोचक तथ्य	14
समाचार परिक्रमा	दिव्य प्रेम सेवा मिशन संचालन समिति की बैठक 23 अक्टूबर 2016	16
''	हरित भारत अभियान के अन्तर्गत कुम्भ क्षेत्र में एक साथ 1100 पौधों का रोपण	17
''	परिवार मिलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह	18
''	स्वतंत्रता दिवस पर वृक्षारोपण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम	19
''	बिरला घाट पर वृक्षारोपण एवं स्वच्छता अभियान	20

www.divyaprem.co.in

परिसर में आए अतिथियों के उद्गार

दिव्य प्रेम सेवा मिशन में आकर मिशन के उद्देश्यों के विषय में जानकर बहुत अच्छा लगा। सभी कार्यकर्ता संस्कारित हैं। छात्रावास में जाकर विद्यार्थियों से मिला, सभी के विचार अच्छे लगे।

-उमादत्त सेमवाल, नई टिहरी

सेवा मिशन आकर अच्छा लगा जिस पवित्र कार्य को यह संस्था कर रही है। उसमें ईश्वर मदद करे यही शुभेच्छा है।

-निरंजन सिंह कसाना, भौपुरा, गाजियाबाद

सेवा मिशन का सेवा कार्य बहुत अच्छा है। पीड़ितों के जीवन में नई आशा नई उमंग उनके बच्चों को यहाँ मिल रही है। मिशन के कार्यकर्ताओं को मेरा शत् शत् प्रणाम।

-सुश्री गीता मुंडे, मुम्बई

आज मेरी बहुत पुरानी आकांक्षा पूर्ण हुई है। मारवाड़ी समाज और दिव्य प्रेम सेवा मिशन के माध्यम से यह मानव सेवा का अवसर मिला हम अपने आप को सौभाग्यशाली मानते हैं। सेवा मिशन का माहौल देखकर अच्छा लगा, बार-बार यहाँ आने का अवसर मिलता रहे ऐसी ईश्वर से प्रार्थना है।

- आर.के. चोखानी, उत्तराखण्ड मारवाड़ी समाज, हरिद्वार

दिव्य प्रेम सेवा मिशन आश्रम में आकर बहुत ही अच्छा लगा। आप लोगों द्वारा बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य किया जा रहा है, वह अतुलनीय है। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

-रंजना वर्मा, सीडीओ, हरिद्वार

प्रथम बार यहाँ आया, बहुत अच्छा लगा। बच्चों के लिए आवास, भोजन और शिक्षा, चिकित्सा की अच्छी सुविधाएं हैं। संस्था द्वारा सराहनीय कार्य किया जा रहा है।

-प्रफुल्ल ध्यानी, उत्तराखण्ड

अपने साथी सहयोगियों सहित इस पवित्र स्थान पर सेवा के लिए समर्पित हुआ। यहाँ जो भी सेवा की जिम्मेदारी मिलेगी वह सहर्ष स्वीकार करूंगा।

-अवतार सिंह भडाना, पूर्व सांसद एवं रा.का.स., भाजपा

परिसर में संचालित विद्यालय देखकर मन आनंदित हो गया। इनमें आत्मविश्वास, साहस, अनुशासन भी कूट-कूट कर भरा है। परिसर के स्वयंसेवकों का स्वभाव मिलनसार है। आतिथ्य भाव देखकर अभिभूत हो गया।

-पंकज चौबे, नेहरू विहार, दिल्ली

आश्रम की व्यवस्था, बच्चों का हॉस्टल अत्यन्त सुन्दर है। इनकी योग्यता , संगीत आदि देखकर लगा कि बच्चों का सर्वांगीण विकास आश्रम द्वारा बहुत ही जतन से हो रहा है। आश्रम का भविष्य उज्ज्वल हो व सतत् बच्चों के भविष्य का निर्माण करते रहें, यही मेरी ईश्वर से कामना है।

-डॉ. वर्षा यादव पत्नि राजेश यादव, आईएस,जयपुर, राजस्थान

अति सुन्दर व्यवस्था स्कूल की देखी। बच्चों को भी मन लगाकर अपने कार्यों को करते देखा, विशेष रूप से बालिकाओं का छात्रावास हमें बहुत ही अच्छा लगा, जहाँ लगभग पच्चीस बालिकाओं ने अपना प्रार्थना गीत सुनाकर हमारा हार्दिक अभिनन्दन किया। ईश्वर आप को निरन्तर आगे बढ़ने की शक्ति दे, यही प्रार्थना करते हैं।

-हरीश चोपड़ा, कोलकाता

वन्देमातरम कुंज में कई बार आना हुआ है, दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा बहुत ही अच्छे कार्य किये जा रहे हैं। कुष्ठरोगियों के बच्चों की शिक्षा, पालन पोषण व समाज हित के अनेक कार्य जैसे स्वच्छता अभियान, ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय निर्माण आदि देखकर आत्मसंतोष मिलता है।

-कुसुम कण्डवाल, प्रदेश उपाध्यक्ष-भाजपा उत्तराखण्ड

कृपया पत्र के द्वारा अपनी प्रतिक्रिया से हमें जरूर अवगत कराएं। आप अपनी प्रतिक्रिया sewa_jyoti@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं। अपनी प्रतिक्रिया व सुझाव इस पते पर भेजें:-

दिव्य प्रेम सेवा मिशन, सेवाकुंज, चण्डीघाट

पो. कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) पिन कोड-249408

फोन नं. - 01334-222211

सम्पादकीय

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा झंडा ऊँचा रहे हमारा

प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र का अपना एक ध्वज होता है जो उस देश के गौरव और सम्मान का प्रतीक होता है। हमारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा है, जो देश की स्वतंत्रता के बाद से हमारे राष्ट्रीय भवनों पर फहरा रहा है। यह एक स्वतंत्र देश होने का संकेत है। इसको वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक के दौरान अपनाया गया था। 15 अगस्त 1947 को भारतवर्ष स्वतन्त्र हुआ था और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू ने लालकिले पर प्रथम बार ध्वजारोहण किया था। हमारी पराधीनता का प्रतीक यूनियन जैक उस दिन उतार दिया गया था। तब से आज तक राष्ट्र की आन-बान और शान का प्रतीक तिरंगा फहरा रहा है।

प्रसिद्ध उद्योगपति नवीन जिंदल द्वारा लड़ी गई सात सालों की लंबी कानूनी लड़ाई के बाद सुप्रीम कोर्ट ने देश के प्रत्येक नागरिक को आदर, प्रतिष्ठा एवं सम्मान के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराने का अधिकार दिया तथा प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार बना है। इस फैसले के बाद केंद्रीय मंत्रिमंडल ने फ्लैग कोड में संशोधन किया था। कोर्ट ने आादेश दिया कि वह इस विषय को गंभीरता से ले और फ्लैग कोड में संशोधन भी करे। इससे पूर्व स्वाधीनता दिवस और गणतंत्र दिवस के अलावा किसी भी दिन भारत के नागरिकों को अपना राष्ट्रध्वज फहराने का अधिकार नहीं था। सुप्रीम कोर्ट के आदेश से 26 जनवरी 2002 से भारत सरकार ने फ्लैग कोड में संशोधन कर भारत के सभी नागरिकों को किसी भी दिन राष्ट्र ध्वज को फहराने का अधिकार दिया, बशर्ते, इस राष्ट्र ध्वज को फहराने में किसी भी स्थिति में इसका अपमान ना होने पाए।

अब आज के सबसे ज्यादा चर्चित व्यक्ति श्री श्याम नारायण चौकसे हैं जिनकी वजह से सिनेमाघरों में राष्ट्रगान बजाने का आदेश दिया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने चौकसे की याचिका पर ही फैसला सुनाया है कि हर सिनेमाघर में फिल्म शुरू होने से पहले राष्ट्रगान बजेगा और हर किसी को उसके सम्मान में खड़ा होना होगा। सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रीय गान, यानी 'जन गण मन' से जुड़े एक अहम आदेश में कहा कि देशभर के सभी सिनेमाघरों में फिल्म शुरू होने से पहले राष्ट्रीय गान जरूर बजेगा। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि राष्ट्रीय गान बजते समय सिनेमाहॉल के पर्दे पर राष्ट्रीय ध्वज दिखाया जाना भी अनिवार्य होगा और सिनेमाघर में मौजूद सभी लोगों को राष्ट्रीय गान के सम्मान में खड़ा होना होगा। अब देश में एक ऐसा माहौल तैयार हो गया है कि कुछ भी निर्णय आता है तो कुछ लोग उसका विरोध अवश्य करते हैं। वैसे सकारात्मक पक्षों पर बहस और विरोध या असहमति जताना भी लोकतंत्र में एक स्वस्थ परंपरा है। वहीं कुछ लोगों को राष्ट्रीय गान के लिए सिनेमा हॉल उचित स्थान नहीं लग रहा। कुछ लोग दिव्यांगों की मिसाले दे रहे कि उन्हें कठिनाई होगी। वहीं देश में कुछ ऐसे भी हैं जो एक समुदाय विशेष के तुष्टिकरण की मद्देनजर बेवजह इसे उछाल रहे हैं।

हाल के वर्षों में महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ समेत कुछ राज्यों में इस प्रथा को फिर से शुरू कर दिया गया है। लोग स्वेच्छा से अपनी जगह पर खड़े हो जाते हैं या रुक जाते हैं। 52 सेकंड्स देखा जाये तो बेहद छोटी इकाई है समय की। वह धुन धड़कन बन दिल में धड़कने लगती है। कुछ लोगों ने कहा कि वो विरोध स्वरुप थिएटर नहीं जायेंगे। मुझे उनसे कहना है जिनकी राष्ट्रीय गान के वक्त खड़े होने में कोई व्यक्तिगत अहम् की क्षति होती है, बेहतर है वो हॉल के बाहर 52 सेकंड रहें। वैसे सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले को जो नापसंद कर रहे हैं उनसे भी कोई शिकायत नहीं क्योंकि एक तरह से दोनों ही पक्ष झंडे, देश भक्ति और देशहित की ही बातें कर रहे न कि जातीयता, हिन्दू-मुस्लिम या ऊँच-नीच इत्यादि नकारात्मक मुद्दों की। विरोध प्रशंसनीय है क्योंकि इस में राष्ट्रप्रेम और उसके मान सम्मान की भावना निहित है। यूं देखा जाए तो इस आदेश के बाद से ही सकारात्मकता की लहर बह निकली है। सोचिये कि थोड़े-थोड़े दिन पर उस जादुई धुन को सुनने के बाद कितना सुखद बदलाव होगा विचारों में।

जनवरी का महीना हम सभी देशवासियों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि 26 जनवरी को ही हमारा देश गणतंत्र के रूप में स्थापित हुआ था। अनेकों राष्ट्रभक्तों और शहीदों की कुर्बानियों की बदौलत अंग्रेजी तानाशाही से मुक्त होने के बाद औपचारिक तौर पर एक गणतांत्रिक प्रजातंत्र के रूप में अपना संविधान निर्माण कर विकास पथ पर अग्रसर हुआ था। इस अवसर पर सभी कर्मठ देशवासियों एवं शहीदों तथा भारत निर्माण में लगे सभी नागरिकों का अभिनन्दन करते हैं। स्वाधीनता के लिए अभूतपूर्व त्याग और बलिदान करने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चन्द्र बोस का जन्मदिन भी इसी जनवरी माह की 23 तारीख को पड़ता है, ऐसे महान देशभक्त को सादर नमन करते हुए उनकी याद और संस्मरणों को जनमानस में और ज्यादा स्थापित करने की आवश्यकता है ताकि देश में देश भक्ति की भावना और प्रज्जवलित हो। इसी को दिव्य प्रेम सेवा मिशन ने ध्यान में रखते हुए सेवाकुंज परिसर हरिद्वार में 100 फीट ऊँचे राष्ट्रध्वज की स्थापना की है जो उत्तराखण्ड में प्रथम सबसे ऊँचा स्थापित राष्ट्रध्वज है। 'सेवा ज्योति' का यह अंक समर्पित है उन देश की सीमा पर हो रहे शहीदों को जो अपनी जान की परवाह न करते हुए इस झण्डे की आन-बान और शान हेतु डटे रहकर अपने प्राण न्यौछावर कर रहे हैं।

संजय चतुर्वेदी

राष्ट्रीय ध्वज यात्रा

पहला ध्वज :- 7 अगस्त 1906 को पारसी बागान चौक (ग्रीन पार्क) कलकत्ता में फहराया गया था जिसे अब कोलकाता कहते हैं। इस ध्वज को लाल, पीले और हरे रंग की क्षैतिज पट्टियों से बनाया गया था।

दूसरा ध्वज :- पेरिस में मैडम कामा और 1907 में उनके साथ निर्वासित किए गए कुछ क्रांतिकारियों द्वारा फहराया गया था (कुछ के अनुसार 1905 में)। यह भी पहले ध्वज के समान था सिवाय इसके कि इसमें सबसे ऊपरी की पट्टी पर केवल एक कमल था किंतु सात तारे सप्तऋषि को दर्शाते हैं। यह ध्वज बर्लिन में हुए समाजवादी सम्मेलन में भी प्रदर्शित किया गया था।

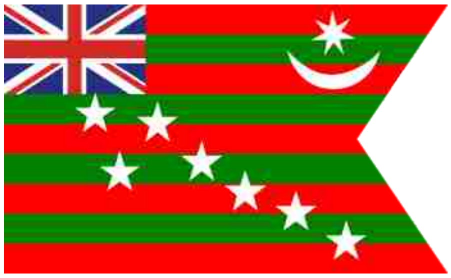

तीसरा ध्वज :- 1917 में आया जब हमारे राजनैतिक संघर्ष ने एक निश्चित मोड लिया। डॉ. एनी बीसेंट और लोकमान्य तिलक ने घरेलू शासन आंदोलन के दौरान इसे फहराया। इस ध्वज में 5 लाल और 4 हरी क्षैतिज पट्टियां एक के बाद एक और सप्तऋषि के अभिविन्यास में इस पर बने सात सितारे थे। बांयी ओर ऊपरी किनारे पर (खंभे की ओर) यूनियन जैक था। एक कोने में सफेद अर्धचंद्र और सितारा भी था।

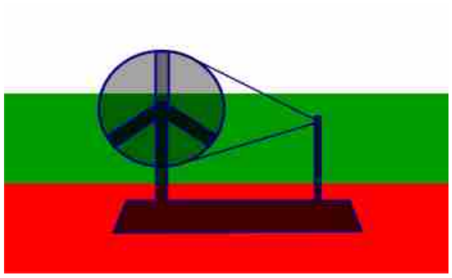

चौथा ध्वज :- अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सत्र के दौरान जो 1921 में बेजवाड़ा (अब विजयवाड़ा) में किया गया यहाँ आंध्र प्रदेश के एक युवक ने एक झंडा बनाया और गांधी जी को दिया। यह दो रंगों का बना था। लाल और हरा रंग जो दो प्रमुख समुदायों अर्थात हिन्दू और मुस्लिम का प्रतिनिधित्व करता है। गांधी जी ने सुझाव दिया कि भारत के शेष समुदाय का प्रतिनिधित्व करने के लिए इसमें एक सफेद पट्टी और राष्ट्र की प्रगति का संकेत देने के लिए एक चलता हुआ चरखा होना चाहिए।

पाँचवा ध्वज :- वर्ष 1931 ध्वज के इतिहास में एक यादगार वर्ष है। तिरंगे ध्वज को हमारे राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया गया। यह ध्वज जो वर्तमान स्वरूप का पूर्वज है, केसरिया, सफेद और मध्य में गांधी जी के चलते हुए चरखे के साथ था। तथापि यह स्पष्ट रूप से बताया गया इसका कोई साम्प्रदायिक महत्व नहीं था और इसकी व्याख्या इस प्रकार की जानी थी। इस ध्वज को 1931 में अपनाया गया। यह ध्वज भारतीय राष्ट्रीय सेना का संग्राम चिन्ह भी था।

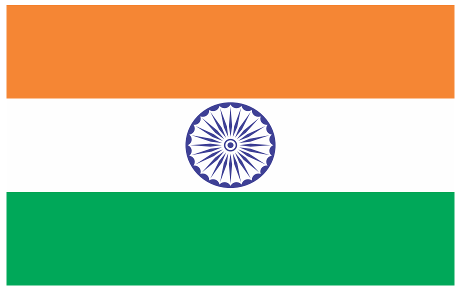

भारत का वर्तमान तिरंगा ध्वज

राष्ट्रीय ध्वज 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने इसे मुक्त भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया। स्वतंत्रता मिलने के बाद इसके रंग और उनका महत्व बना रहा। केवल ध्वज में चलते हुए चरखे के स्थान पर सम्राट अशोक के धर्म चक्र को दिखाया गया। इस प्रकार कांग्रेस पार्टी का तिरंगा ध्वज अंततः स्वतंत्र भारत का तिरंगा ध्वज बना।

''सभी राष्ट्रों के लिए एक ध्वज होना अनिवार्य है। लाखों लोगों ने इस पर अपनी जान न्यौछावर की है। यह एक प्रकार की पूजा है, जिसे नष्ट करना पाप होगा। ध्वज एक आदर्श का प्रतिनिधित्व करता है। यूनियन जैक अंग्रेजों के मन में भावनाएं जगाता है जिसकी शक्ति को मापना कठिन है। अमेरिकी नागरिकों के लिए ध्वज पर बने सितारे और पट्टियों का अर्थ उनकी दुनिया है। इस्लाम धर्म में सितारे और अर्ध चन्द्र का होना सर्वोत्तम वीरता का आह्वान करता है।'' ''हमारे लिए यह अनिवार्य होगा कि हम भारतीय मुस्लिम, ईसाई, ज्यूस, पारसी और अन्य सभी, जिनके लिए भारत एक घर है, एक ही ध्वज को मान्यता दें और इसके लिए मर मिटें।''

–महात्मा गाँधी

हमारा राष्ट्रध्वज हमारा सम्मान

-जवाहरलाल कौल
पद्म विभूषित

सर्वोच्च न्यायालय ने एक असाधारण फैसले में देश के सभी सिनेमाघरों में शो आरम्भ होने से पहले राष्ट्रगान गाने का आदेश दिया है जिस में राष्ट्रध्वज भी पर्दे पर फहराया जाए। उस समय सभी उपस्थित लोगों को राष्ट्रध्वज के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए खड़े रहने की भी हिदायत दी है। यह असाधारण इसलिए नहीं कि पहली बार सब से ऊँची अदालत ने राष्ट्रगान के प्रति बढ़ती अवहेलना पर गम्भीर रुख अपनाया है, अपितु यह भी स्पष्ट किया है कि समय आया है कि लोग समझ लें कि वे एक राष्ट्र में रहते हैं और उस राष्ट्र के सम्मान चिन्हों के प्रति सम्मान व्यक्त करना आवश्यक है। यह हमारे संविधान में नागरिकों के कर्तव्यों का अनिवार्य अंग है। अधिकतर भारतीय अपने झंडे और राष्ट्रगान के प्रति सहज रूप से ही आदर व्यक्त करते ही हैं क्योंकि आम भारतीय राष्ट्रभक्त ही है। लेकिन पिछले कुछ दशकों से हमारे देश में कुछ लोगों में कभी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के नाम पर तो कभी धर्म निरपेक्षता के बहाने राष्ट्रीय सम्मान के प्रतीकों के प्रति निरादर की भावना बढ़ती रही है। यह समझ लेना होगा कि अगर हमारे संविधान निर्माताओं ने नागरिकों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता और कई और तरह के अधिकार सुनिश्चित किये हैं तो यह भी स्पष्ट किया है कि यह तभी संभव होगा जब हम उस संविधान की भावना का भी आदर करें, केवल शब्दों तक अपने आप को सीमित न रखें। यह हमारे एक रहने की इच्छा और अभिलाषा का दस्तावेज हैं। बिना भावना के कोई जनसमुदाय एक राष्ट्र नहीं रह सकता है। संविधान बनाते समय हमारे नेताओं ने उस की पहली प्रति पर जो चित्र अंकित करवाये वे भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता के ही बिम्ब हैं। सच है कि राष्ट्रध्वज के आकार और उस में निहित संदेश के बारे में आरम्भ में कोई सहमति नहीं थी। अलग-अलग विचारों और रुझानों को व्यक्त करते हुए लोग भिन्न-भिन्न तरह के ध्वजों को आगे बढ़ाते रहे। लेकिन यह उसी प्रकार स्वाभाविक था जिस प्रकार आरम्भ में स्वतंत्रता आंदोलन भी चंद सम्भ्रांत लोगों का मंच था लेकिन देश में स्वशासन की कामना बढ़ने के साथ ही उस मंच का रूप बदलने लगा और कुछ ही दशकों में वह मंच न रहकर एक व्यापक आंदोलन बन गया।

यह संयोग नहीं कि पूरे भारत की एक ही पताका बनाने का सुझाव भी आरम्भ में उसी तरह अंग्रेजी शासकों ने दिया जैसे पहले राजनैतिक दल कांग्रेस के गठन का सुझाव। जिस झंडे का प्रस्ताव दिया गया था उसका राष्ट्रीय आंदोलन के साथ कोई सम्बंध नहीं था। वह यह दिखाने के लिए था कि सारा भारत अंग्रेजी साम्राज्य का अंग है। वे बताना चाहते थे कि भारत के बड़े भूभाग पर यद्यपि स्वतंत्र राजाओं का शासन था तथापि वास्तव में कोई भी भाग साम्राज्य से अलग नहीं था, वैसे ही जैसे अन्य उपनिवेश आस्ट्रेलिया और कनाडा थे। लेकिन शीघ्र ही राष्ट्रवादी संगठनों ने पहल की और भारतीय उपनिवेश का नहीं, भारतीय राष्ट्र का झंडा बनाने के लिए सुझाव देना आरम्भ किया। आरम्भिक सुझावों का आधार कुछ भारतीय प्रतीकों के आधार पर एक झंडा बनाना था। इस में किसी ने गणेश को राष्ट्र का प्रतीक माना तो किसी ने काली माता या गौमाता को आधार मान कर झंडे की कल्पना की थी। स्वाभाविक था कि इस पर कोई आम सहमति नहीं हो सकती थी। मुसलमान और ईसाई किसी देवी देवता को अपना प्रतीक मानने को तैयार नहीं थे। बंग भंग यानी बंगाल के विभाजन के पश्चात् झंडे के प्रश्न को महत्त्व मिला। बंकिम चंद्र के प्रसिद्ध उपन्यास में क्रांतिकारियों के गीत वंदे मातरम् के लोकप्रिय होने से यह धारणा भी विकसित हुई कि इसी भावना को लेकर झंडे का भी विकास होना चाहिए। एक स्वदेशी झंडे का नमूना पेश किया गया जिस के रंग तो तीन थे लेकिन केसरी के बदले लाल था और श्वेत के बदले पीला। नीचे चांद और सूर्य की छवि थी तो ऊपर किनारी पर श्वेत कमल बने थे। लेकिन मैडम कामा ने इस में कुछ संशोधन करने का सुझाव दिया। स्वामी विवेकानंद जी की शिष्या भगनी निवेदिता ने भी अपना एक झंडा विचारार्थ प्रस्तुत किया था।

राष्ट्रीय ध्वज के बारे में गम्भीरता से सोचने का सिलसिला एक पुस्तिका के प्रकाशन से आरम्भ हुआ था। दक्षिण के पिंगली वेनैया ने एक पुस्तिका छापी जिस में तीस प्रकार के झंडों के चित्र थे। वास्तव में अब जो झंडा हमने अपनाया है वह भी कमोबेश उन्हीं के बनाए झंडे पर ही आधारित है। 1921 में गांधीजी ने एक झंडे का सुझाव दिया। यह तिरंगा था जिस के बीच में चर्खे का चित्र अंकित था। चर्खा उस समय खादी का ही प्रतीक नहीं था अपितु स्वालम्बन का प्रतीक भी माना जाता था। इसके अतिरिक्त उस में हिंदू मस्लिम एकता स्वरूप लाल और हरे रंग तो थे लेकिन इस से विवाद खड़ा हो गया कि साम्प्रदायिक आधार पर झंडे को बनाना कहाँ तक उचित होगा। इसलिए स्वयं गांधी जी ने ही इन रंगों की अलग व्याख्या करके शौर्य, प्रकृति और शुचिता के रूप में कथित रूप से असाम्प्रदायिक विकल्प बताया। लेकिन जब इस झंडे को नागपुर अधिवेशन में फहराया गया तो पुलिस ने लोगों को भगाने के लिए लाठीचार्ज किया और पांच स्वयंसेवकों को गिरफ्तार भी कर लिया। लेकिन इस से राष्ट्रीय झंडे के पक्ष में जनभावना उमड़ पड़ी और जमनालाल बजाज के नेतृत्व में झंडा आंदोलन आरम्भ हुआ। कई नगरों में जन सभाओं पर प्रतिबंध लगा और गिरफ्तारियां होने लगी। इसी बीच देश की स्वतंत्रता का फैसला हो चुका था और सरकारी विरोध भी कम हो गया। मुस्लिम लीग ने अलग राष्ट्र की धारणा फैला दी थी। इसलिए एक समिति ने झंडे पर अंतिम निर्णय किया जिस में चर्खे के बदले बीच में अशोक के धर्मचक्र को रखने का फैसला हुआ। धर्मचक्र न केवल शांति और सहमति का प्रतीक है अपितु यह गति का भी प्रतीक माना जाता है।

स्वाभाविक है कि इस झंडे का विकास देश की स्वतंत्रता के आंदोलन के साथ-साथ हुआ और इस के पीछे मान्यता है कि यह इस बात का प्रमाण है कि हम एक देश के ही नागरिक नहीं हैं, एक राष्ट्र के भी सदस्य हैं, जिस के कुछ मूल्य हैं, जिन की अवहेलना हमारे संविधान की भावना के विरुद्ध है ही, हमारी राष्ट्रीयता का भी अपमान है।

(लेखक : सेवा मिशन के संरक्षक एवं वरिष्ठ पत्रकार)

भारत के राष्ट्रीय प्रतीक

भारत का राष्ट्रीय प्रतीक अर्थात् भारत के राष्ट्रीय पहचान का आधार। इसकी विशिष्ठ पहचान और विरासत का कारण राष्ट्रीय पहचान है जो भारतीय नागरिकों के दिलों में देशभक्ति और गर्व की भावना को महसूस कराता है। ये राष्ट्रीय प्रतीक दुनिया से भारत की अलग छवि बनाने में मदद करते हैं। यहाँ बहुत सारे राष्ट्रीय प्रतीक हैं जिनके अपने अलग अर्थ हैं जैसे राष्ट्रीय पशु 'बाघ' जो मजबूती को दिखाता है, राष्ट्रीय फूल 'कमल' जो शुद्धता का प्रतीक है, राष्ट्रीय पेड़ 'बरगद' जो अमरत्व को प्रदर्शित करता है, राष्ट्रीय पक्षी 'मोर' जो सुन्दरता को दिखाता है, राष्ट्रीय फल 'आम' जो देश की उष्णकटिबंधीय जलवायु को बताता है, राष्ट्रीय गीत और राष्ट्रीय गान प्रेरणा का कार्य करता है, राष्ट्रीय चिन्ह 'चार शेर' शक्ति, हिम्मत, गर्व और विश्वास आदि को दिखाता है। देश की खास छवि की योजना के लिये कई सारे राष्ट्रीय प्रतीकों को चुना गया, जो लोगों को इसकी संस्कृति की ओर ले जाएं, साथ ही साथ दुनिया को इसकी सकारात्मक विशेषता को प्रदर्शित करें।

राष्ट्रीय ध्वज : तिरंगा

हमारा राष्ट्रीय ध्वज तीन रंगों से बना है इसलिए हम इसे तिरंगा भी कहते हैं। इसमें सबसे ऊपर गहरा केसरिया, बीच में सफेद और सबसे नीचे गहरा हरा रंग बराबर अनुपात में हैं। ध्वज को साधारण भाषा में झंडा भी कहा जाता है। झंडे की चौड़ाई और लम्बाई का अनुपात 2:3 है। सफेद पट्टी के केंद्र में गहरा नीले रंग का चक्र है, जिसका प्रारूप अशोक की राजधानी सारनाथ में स्थापित सिंह के शीर्षफलक के चक्र में दिखने वाले चक्र की भांति है। चक्र की परिधि लगभग सफेद पट्टी की चौड़ाई के बराबर है। चक्र में 24 तीलियां हैं। राष्ट्रीय ध्वज का डिजाइन 22 जुलाई 1947 की एक मीटिंग में संवैधानिक सभा द्वारा भारत के प्रभुत्व के सरकारी ध्वज के रुप में आधिकारिक तौर पर भारत के राष्ट्रीय ध्वज के वर्तमान स्वरूप को स्वीकार किया गया था। कानून के तहत तिरंगे का निर्माण हाथ से काते हुए कपड़े से हुआ है जिसे खादी कहा जाता है। भारतीय ध्वज कानून इसके उपयोग और प्रदर्शन को नियंत्रण करता है।

राष्ट्रीय पक्षी : मोर

मोर के अद्‌भुत सौंदर्य के कारण ही भारत सरकार ने 26 जनवरी, 1963 को इसे राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया। ये भारतीय उपमहाद्वीप का देशीय पक्षी है, जो एकता के सजीव रंगों और भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करता है। ये सुन्दरता, गर्व और पवित्रता को दिखाता है। इसके पास एक बड़े पंखों के आकार में फैले पंख हैं और लंबी पतली गर्दन है। मादा मोर की अपेक्षा नर मोर ज्यादा रंगीन और सुंदर होते हैं। जब भी मानसून का आगमन होता है तब वो खुश हो जाते हैं और आकर्षक तरीके से अपने पंखों को फैला लेते हैं। भारतीय वन्यजीव सुरक्षा की धारा 1972 के तहत संसदीय आदेश पर सुरक्षा प्रदान की गयी है। ये देश के हर क्षेत्र में पाया जाता है। भारत में मोर का शिकार प्रतिबंधित है।

राष्ट्रीय पुष्प : कमल

कमल को भारत के राष्ट्रीय फूल के रूप में अंगीकृत किया गया। यह एक पवित्र पुष्प है तथा प्राचीन भारतीय काल और पुराणों में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राचीनकाल से ही इसे भारतीय संस्कृति में शुभ प्रतीक माना जाता है। पूरी दुनिया में ये भारत के पारंपरिक मूल्यों और सांस्कृतिक गर्व को प्रदर्शित करता है। ये उर्वरता, ज्ञान, समृद्धि, सम्मान, लंबी आयु, अच्छी किस्मत, दिल और दिमाग की सुंदरता को भी दिखाता है। इसका प्रयोग देश भर में धार्मिक अनुष्ठानों आदि के लिये भी होता है।

राष्ट्रीय पेड़ः बरगद

भारतीय बरगद के पेड़ को भारत के राष्ट्रीय पेड़ के रुप में अंगीकृत किया गया है। इसे अविनाशी पेड़ माना जाता है क्योंकि ये अपनी जड़ों से बहुत बड़े क्षेत्र में नए पौधों को विकसित करने की क्षमता रखता है। भारत में प्राचीन समय से ही ये लंबी आयु का अभिलक्षण और महत्व रखता है। कई प्राचीन कहानियों में इसकी महत्वता का वर्णन किया गया है। ये पूरे राष्ट्र में हर जगह पाया जाता है और सामान्यत: मंदिरों के आसपास और सड़क के किनारों पर लगाया जाता है। हिन्दू मान्यता के अनुसार, ये भगवान शिव का आसन है और इसी पर बैठ कर वो संतों को उपदेश देते हैं, इसी वजह से हिन्दू धर्म के लोग इसकी पूजा करते हैं। इस वृक्ष की पूजा की परंपरा खासतौर से हिन्दू शादी-शुदा महिलाओं द्वारा अपनी लंबी और खुशहाल शादी-शुदा जीवन की कामना के लिये होता है।

राष्ट्रीय गान : जन गण मन

24 जनवरी 1950 में संवैधानिक सभा द्वारा भारत के राष्ट्रगान 'जनगणमन' को अधिकारिक रूप से अंगीकृत किया गया था। इसको रविन्द्रनाथ टैगोर (प्रसिद्ध बंगाली कवि, कलाकार, नाट्यकार, दर्शनशास्त्री, संगीतकार और उपन्यासकार) द्वारा लिखा

गया था। 27 दिसंबर 1911 में भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के कलकत्ता सत्र में इसे पहली बार गाया गया था। कुछ राजनीतिक कारणों की वजह से 'वन्दे मातरम्' की बजाय 'जनगणमन' को देश का राष्ट्रगान के रुप में अंगीकृत करने का फैसला किया गया। भारत के सभी राष्ट्रीय कार्यक्रमों के दौरान इसे गाया जाता है। इसके पूरे प्रस्तुतिकरण में 52 सेकेंड का समय लगता है ।

जन-गण-मन अधिनायक, जय हे
भारत-भाग्य-विधाता,
पंजाब-सिंधु गुजरात-मराठा,
द्रविड़-उत्कल बंग,
विन्ध्य-हिमाचल-यमुना
गंगा, उच्छल-जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा,
जन-गण-मंगल दायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय जय हे।

राष्ट्रीय नदी : गंगा नदी

भारत की सबसे लंबी और पवित्र नदी गंगा है 2510 कि.मी. के पहाड़ी, घाटी और मैदानी इलाकों तक फैली। दुनिया की सबसे ज्यादा आबादी इस नदी के किनारे बसी है। प्राचीन समय से ही हिन्दुओं के लिये गंगा नदी बहुत बड़ा धार्मिक महत्व रखती है। हिन्दू धर्म के लोगों द्वारा इसे ईश्वर के समान पूजा जाता है और इसके पवित्र जल को कई अवसरों पर इस्तेमाल किया जाता है। हिमालय में गंगोत्री ग्लेशियर के हिमक्षेत्र में भगीरथी नदी के रूप में गंगा की उत्पत्ति हुई। उत्तरांचल में हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी के सुंदरवन तक विशाल भू-भाग को सींचती है। गंगा, देश की प्राकृतिक संपदा ही नहीं, जन जन की भावनात्मक आस्था का आधार भी है।

राष्ट्रीय जलीय जीव : गंगा डॉल्फिन

भारत की राष्ट्रीय जलीय जीव डॉल्फिन है। डॉल्फिन की दो प्रजातियां हैं। गंगा की डॉलफिन को राष्ट्रीय जलचर पशु के रूप में अंगीकृत किया गया है। ये पावन गंगा की शुद्धता को प्रदर्शित करती है क्योंकि ये केवल साफ और शुद्ध पानी में ही जिंदा रह सकती है। डॉलफिन एक स्तनधारी जीव है अर्थात् ये बच्चों को जन्म देती है। इसकी लंबी नुकीली नाक और दोनों जबड़ों पर दिखायी देने वाले दाँत बेहद साफ हैं। इसकी आँखों में कोई लेंस नहीं है। इसका शरीर ठोस और चमड़ा हल्के भूरे रंग का है। मादा डॉलफिन नर डॉलफिन से ज्यादा बड़ी होती है। ये साँस लेने के दौरान आवाज करती है इसलिये इन्हें सुसु भी कहा जाता है। सामान्यत: ये भारत में गंगा, मेघना और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों में पायी जाती है साथ ही भूटान और बांग्लादेश में भी पायी जाती है। इन्हें दुनिया के सबसे पुराने जीवों में से एक माना जाता है।

राजकीय प्रतीकः अशोक चिह्न

सारनाथ में अशोक के स्तंभ शिखर पर मौजूद शेर को भारत के राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में भारतीय सरकार द्वारा स्वीकार किया गया। 26 जनवरी 1950 में इसे अंगीकृत किया गया था जब भारत गणराज्य बना। अशोक के स्तंभ शिखर पर देवनागरी लिपि में 'सत्यमेव जयते' लिखा है जो मुण्डकोपनिषद् पवित्र हिन्दू वेद के भाग से लिया गया है।

अशोक के स्तंभ शिखर पर चार शेर खड़े हैं जिनका पिछला हिस्सा खंभों से जुड़ा हुआ है। संरचना के सामने इसमें धर्मचक्र (कानून का पहिया) भी है। वास्तव में इसका चित्रात्मक प्रदर्शन सम्राट अशोक के द्वारा बुद्धिष्ठ कार्यस्थल पर किया गया था, गौतम बुद्ध के महान स्थलों में सारनाथ को चिन्हित किया जाता है जहाँ उन्होंने धर्म का पहला पाठ पढ़ाया था। भारत का प्रतीक शक्ति, हिम्मत, गर्व, और विश्वास को प्रदर्शित करता है। पहिये के हर एक तरफ एक अश्व और बैल बना है। वास्तविक अशोक के स्तंभ शिखर पर मौजूद शेर वाराणसी के सारनाथ संग्रहालय में संरक्षित है।

राष्ट्रीय पंचांगः राष्ट्रीय शाके

शक संवत् या राष्ट्रीय शाके भारत का राष्ट्रीय पंचांग है। यह लगभग 78 वर्ष ईसा पूर्व प्रारम्भ हुआ था। शाका कैलेंडर को पहली बार अधिकारिक रुप से चैत्र प्रतिपदा,1879, शाका काल, या 22 मार्च 1957 को इस्तेमाल हुआ था। कैलेंडर सुधार कमेटी के प्रमुख (तारा भौतिकविद् मेघनाद साह) और दूसरे सहयोगियों को एकदम सही कैलेंडर बनाने के लिये कहा गया था जिसे पूरे देश के लोग अंगीकृत करें। इस संवत् का यह नाम क्यों पड़ा, इस विषय में विभिन्न एक मत हैं। इसे कुषाण राजा कनिष्क ने चलाया या किसी अन्य ने, इस विषय में अन्तिम रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है।

राष्ट्रीय पशु : बाघ

राष्ट्रीय पशु 'बाघ' (पैंथरा टाइग्रिस - लिन्नायस), पीले रंगों और धारीदार लोमचर्म वाला एक पशु है। राजसी बाघ, तेंदुआ, टाइग्रिस धारीदार जानवर है। अपनी शालीनता, दृढ़ता, फुर्ती और अपार शक्ति के लिए बाघ को राष्ट्रीय पशु कहलाने का गौरव

प्राप्त है। इसकी आठ प्रजातियों में से भारत में पाई जाने वाली प्रजाति को 'रॉयल बंगाल टाइगर' के नाम से जाना जाता है। उत्तर-पश्चिम भारत को छोड़कर बाकी सारे देशों में यह प्रजाति पायी जाती है। भारत के अतिरिक्त यह नेपाल, भूटान और बंगलादेश जैसे पड़ोसी देशों में भी पाया जाता है। बाघों की अधिकतम उम्र लगभग 20 साल होती है।

राष्ट्रीय गीतः वन्दे मातरम्

इसका स्थान जन गण मन के बराबर है। यह स्वतंत्रता की लड़ाई में लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत था। वास्तविक वन्दे मातरम् के शुरुआत के दो छंद को अधिकारिक रूप से 1950 में भारत के राष्ट्रगीत के रूप में अंगीकृत किया गया था। वास्तविक वन्दे मातरम् में छः छंद हैं।

इसको बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा बंगाली और संस्कृत में 1882 में उनके अपने उपन्यास आनन्दमठ् में लिखा गया था। इस गीत को इसे पहली बार सन 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के राजनीतिक संदर्भ में रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा गाया गया था। 1909 में श्री अरविन्दो घोष द्वारा इसका छंद से अनुवाद किया गया था जो जाना जाता है 'मातृभूमि मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ'। इसका प्रथम पद इस प्रकार है-

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!
सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्,
शस्यश्यामलाम्, मातरम्! वंदे मातरम्!
शुभ्रज्योत्सनाम् पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम्, मातरम्!
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्

राष्ट्रीय फलः आम

आम को सभी फलों में राजा का दर्जा प्राप्त है। इसकी उत्पत्ति भारत में हुई और 100 से ज्यादा किस्मों के विभिन्न आकार, माप और रंग में उपलब्ध हैं। ऊष्णकटिबंधीय देशों में आम बड़े पैमाने पर पैदा होते हैं। आम को पूर्वी एशिया, म्यांमार (भूतपूर्व बर्मा) और भारत के असम राज्य का स्थानीय फल माना जाता है। इस रसदार फल को भारत के राष्ट्रीय फल के रूप में अंगीकृत किया गया है। इसकी पैदावार भारत के लगभग हर क्षेत्र में होती है।

राष्ट्रीय खेलः हॉकी

भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है। हॉकी का प्रारम्भ वर्ष 2010 से 4,000 वर्ष पूर्व ईरान में हुआ था। इसके बाद बहुत से देशों में इसका आगमन हुआ पर उचित स्थान न मिल सका। अन्त में इसे भारत में विशेष सम्मान मिला और यह राष्ट्रीय खेल बना। हमारे देश में इसका आरम्भ 100 वर्षों से पहले हुआ था। 11 खिलाड़ियों के दो विरोधी दलों के बीच मैदान में खेले जाने वाले इस खेल में प्रत्येक खिलाड़ी मारक बिंदु पर मुड़ी हुई एक छड़ी (स्टिक) का इस्तेमाल एक छोटी व कठोर गेंद को विरोधी दल के गोल में मारने के लिए करता है।

राष्ट्रीय मुद्रा : भारतीय रुपए का प्रतीक चिह्न

भारतीय रुपए का प्रतीक चिह्न अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आदान-प्रदान तथा आर्थिक संबलता को परिलक्षित कर रहा है। जो 2010 में अंगीकृत किया गया। 8 जुलाई 2011 को रुपये के चिन्हों के साथ भारत में सिक्कों की शुरुआत हुई थी। रुपए का चिह्न भारत के लोकाचार का भी एक रूपक है। रुपए का यह नया प्रतीक देवनागरी लिपि के 'र' और रोमन लिपि के अक्षर 'आर' को मिला कर बना है, जिसमें एक क्षैतिज रेखा भी बनी हुई है। यह रेखा हमारे राष्ट्रध्वज तथा बराबर के चिह्न को प्रतिबिंबित करती है।

भारत का राष्ट्रीयः संकल्प

- भारत मेरा देश और सभी भारतवासी मेरे भाई और बहन हैं।
- मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और मैं इसकी स्मृति और विभिन्न विरासत पर गर्व करता हूँ।
- मैं अवश्य हमेशा इसके लिये योग्य मनुष्य बनने का प्रयास करुँगा।
- मैं अवश्य अपने माता-पिता और सभी बड़ों का आदर करुँगा, और सभी के साथ विनम्रतापूर्वक व्यवहार करुँगा।
- अपने देश और लोगों के लिये, मैं पूरी श्रद्धा से संकल्प लेता हूँ, उनकी भलाई और खुशहाली में ही मेरी खुशी है।

भारतीय गणराज्य द्वारा भारत के राष्ट्रीय संकल्प के रुप में राजभक्ति की कसम को अंगीकृत किया गया था। सामान्यतः ये संकल्प भारतीयों द्वारा सरकारी कार्यक्रमों में और विद्यार्थीयों द्वारा किसी राष्ट्रीय अवसरों (स्वतंत्रता और गणतंत्रत दिवस पर) पर स्कूल और कॉलेजों में लिया जाता है। ये स्कूली किताबों के आमुख पृष्ठ पर लिखा होता है।

भारत का राष्ट्रीयः दिवस

स्वतंत्रता दिवस, गाँधी जयंती और गणतंत्र दिवस को भारत के राष्ट्रीय दिवस के रुप में घोषित किया गया है। स्वतंत्रता दिवस हर साल 15 अगस्त के दिन मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन 1947 में भारतीयों को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली थी। 26 जनवरी 1950 को भारत को अपना संविधान प्राप्त हुआ था इसलिये इस दिन को गणतंत्र दिवस के रुप में मनाया जाता है। हर साल 2 अक्टूबर को गाँधी जयंती मनायी जाती है क्योंकि इसी दिन गाँधी का जन्म हुआ था।

आजादी के दीवानों के बलिदान व त्याग की लालिमा इसके रंगों में बसी है

गुलामी की काली स्याह रात के अंतिम प्रहर जब स्वतंत्रता का सूर्य निकलने का संकेत प्रभात बेला ने दिया, उस दिन 22 जुलाई 1947 को भारत की संविधान सभाकक्ष में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने विश्व एवं भारत के नागरिकों के सामने राष्ट्रध्वज प्रस्तुत किया, यह राष्ट्रध्वज का जन्म-पल था। इस तिरंगे को भारत का राष्ट्रध्वज स्वीकार कर सम्मान दिया। इस अवसर पर पं. जवाहर लाल नेहरू ने बड़ा मार्मिक हृदयस्पर्शी भाषण भी दिया तथा माननीय सदस्यों के समक्ष राष्ट्रध्वज के दो स्वरूप, एक रेशमी खादी व दूसरा सूती खादी से बना ध्वज प्रस्तुत किया। सभी ने करतल ध्वनि के साथ इसे स्वतंत्र भारत के राष्ट्रध्वज के रूप में स्वीकार किया। आजादी के दीवानों के बलिदान व त्याग की लालिमा इसके रंगों में बसी है। ध्वज संहिता के अनुसार यह राष्ट्रीय पर्वो पर फहराया जाने लगा।

लेकिन भारतीय नागरिक अब रात में भी राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहरा सकते हैं। इसके लिए शर्त होगी कि झंडे का पोल वास्तव में लंबा हो और झंडा खुद भी चमके। गृह मंत्रालय ने उद्योगपति पूर्व सांसद नवीन जिंदल द्वारा इस संबंध में रखे गये प्रस्ताव के बाद यह फैसला किया। इससे पहले जिंदल ने हर नागरिक के मूलभूत अधिकार के तौर पर तिरंगा फहराने के लिहाज से अदालती लड़ाई जीती थी। जिंदल को दिये गये संदेश में मंत्रालय ने कहा कि प्रस्ताव की पड़ताल की गयी है और कई स्थानों पर दिन और रात में राष्ट्रीय ध्वज को फहराने के लिए झंडे के बड़े पोल लगाने पर कोई आपत्ति नहीं है। जिंदल ने जून 2009 में मंत्रालय को दिये गये प्रस्ताव में बड़े आकार के राष्ट्रीय ध्वज को स्मारकों के पोलों पर रात में भी फहराये जाने की अनुमति मांगी थी। जिंदल ने कहा था कि भारत की झंडा संहिता के आधार पर राष्ट्रीय ध्वज जहाँ तक संभव है सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच फहराया जाना चाहिए, लेकिन दुनियाभर में यह सामान्य है कि बड़े राष्ट्रीय ध्वज 100 फुट या इससे ऊँचे पोल पर स्मारकों पर दिन और रात फहराये गये होते हैं। मलेशिया, जार्डन, अबू धाबी, उत्तर कोरिया, ब्राजील, मेक्सिको और तुर्कमेनिस्तान जैसे देशों का उदाहरण देते हुए जिंदल ने भारत के लिए भी इस तरह का प्रस्ताव रखा था। इन देशों में स्मारकों पर रात में झंडे लगे होते हैं। जिंदल के पत्र के जवाब में मंत्रालय ने कहा कि इस तरह के पोल लगाये जा सकते हैं, रात में झंडों के चमकने के लिए उचित प्रकाश व्यवस्था होनी चाहिए, जिसमें बिजली जाने की स्थिति में बैकअप व्यवस्था हो। इसके अलावा किसी प्राकृतिक कारण से झंडे को नुकसान पहुंचने के तुरंत बाद इसे बदला जाए। इससे पहले भारत के नागरिकों को सार्वजनिक तौर पर तिरंगा फहराने की इजाजत मिलने के लिए अभियान छेड़ा था और सुप्रीम कोर्ट ने 1996 में एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया था, जिसमें देश के प्रत्येक नागरिक को सम्मान, मर्यादा के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराने को एक मूलभूत अधिकार बताया गया।

भारतीय क्रांतिकारियों के कार्य सिरफिरे युवकों के अनियोजित कार्य नहीं थे। भारत माता की श्रृंखला तोड़ने के लिए सतत संघर्ष करने वाले देशभक्तों की एक अखण्ड परम्परा थी। देश की रक्षा के लिए कर्तव्य समझकर उन्होंने शस्त्र उठाए थे। क्रान्तिकारियों का उद्देश्य अंग्रेजों का रक्त बहाना नहीं था। वे तो अपने देश का सम्मान लौटाना चाहते थे। अनेक क्रान्तिकारियों के हृदय में क्रांति की ज्वाला थी, तो दूसरी ओर अध्यात्म का आकर्षण भी। हंसते हुए फाँसी के फंदे का चुम्बन करने वाले व मातृभूमि के लिए सरफरोशी की तमन्ना रखने वाले ये देशभक्त युवक भावुक ही नहीं, विचारवान भी थे। शोषणरहित समाजवादी प्रजातंत्र चाहते थे। उन्होंने देश के संविधान की रचना भी की थी। सम्भवत: देश को स्वतंत्रता यदि सशस्त्र क्रांति के द्वारा मिली होती तो भारत का विभाजन नहीं हुआ होता, क्योंकि सत्ता उन हाथों में न आई होती, जिनके कारण देश में अनेक भीषण समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। जिन शहीदों के प्रयत्नों व त्याग से हमें स्वतंत्रता मिली, उनमें से कुछ को उचित सम्मान नहीं मिला और स्वतंत्रता के बाद भी गुमनामी का अपमानजनक जीवन जीना पड़ा।

सेवाकुंज परिसर में स्थापित किया गया उत्तराखण्ड का प्रथम 100 फीट ऊँचा राष्ट्रीय ध्वज

संवेदना जब उभरती है तो वह सक्रिय हुए बिना नहीं रहती : डॉ. प्रणव पण्ड्या

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कहा कि मैं इसी नगर में रहते हुए आज प्रथम बार दिव्य प्रेम सेवा मिशन में आया हूँ लेकिन आशीष जी के सेवा कार्यों की पूरी जानकारी रहती है। यहाँ आकर ऐसा कार्य देखकर आशीष जी के प्रति आदर के साथ-साथ श्रद्धा भी हो गयी है। उन्होंने कहा कि सेवा मिशन को उत्तराखण्ड की धरती पर सबसे ऊँचा राष्ट्रीय ध्वज फहराने का गौरव प्राप्त हुआ है। राष्ट्रीय ध्वज राष्ट्र की शान है। उन्होंने कहा कि आज देश में कई जगह आपत्ति जनक नारे लग रहे हैं। यह समय सेना के साथ खड़े होने का है। आज देश के ही कुछ लोगों द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक की प्रमाणिकता पर सन्देह करना देशहित की सोच नहीं हो सकती। सरकार चाहे किसी पार्टी की हो देश को सेना के साथ खड़े रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत में सभी धर्म के लोगों को सम्मान मिलता है और आजादी से इस देश में सभी घूमते हैं। उन्होंने सभी से आवाहन करते हुए कहा कि इस दीवाली में कुम्हार के हाथ का बना मिट्टी का वह दिया जलायें जिसमें देश की मिट्टी की सुगन्ध हो, दीवाली सेना व शहीदों के नाम मनायें और चाइनीज सभी सामानों का बहिष्कार करें तो यही शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जीवन में प्रखरता, पवित्रता, पात्रता हो तभी देश का दिया जलता रहेगा। दिव्य प्रेम सेवा मिशन की सेवाओं का अभिनन्दन करते हुए कहा कि संवेदना जब उभरती है तो वह सक्रिय हुए बिना नहीं रहती। हम और आप मिलकर हरिद्वार नगरी को न केवल उत्तराखण्ड में, बल्कि पूरे देश में ऊँचा उठाने की कोशिश करेंगे। उन्होंने गायत्री परिवार एवं दिव्य प्रेम सेवा मिशन के साथ मिलकर सेवा कार्य करने की घोषणा की। भारत की स्वतंत्रता और राष्ट्रीय भावनाओं पर गौरव बोध करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे देश में जितनी स्वतंत्रता व सद्भावना है उतनी पूरे विश्व में किसी अन्य राष्ट्र में नहीं है। देश की स्वतंत्रता में दिन-रात जुटे संत, सुधारक, शहीदों को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उत्तराखण्ड के हर गांव से न्यूनतम एक-एक सैनिक निकला है। हम उनके शौर्य का सम्मान करें।

राष्ट्रीय ध्वज हर नागरिक की आन-बान-शान का प्रतीक : मा. नरेन्द्र सिंह तोमर

मुख्य अतिथि केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री मा. नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि आज हम जिस तिरंगा ध्वज को फहराने में गौरवान्वित महसूस करते हैं, वह हमें आसानी से प्राप्त नहीं हुआ है इसके लिए हमारे पूर्वजों ने तमाम कष्ट सहकर देश से यूनियन जैक हटाकर तिरंगा लहराने का गौरव हमें प्रदान किया। इसकी खातिर हमारे प्राण भी चले जाएं तो कम है। राष्ट्रीय ध्वज हर नागरिक की आन-बान और शान का प्रतीक है। ध्वज की आन-बान-शान के लिए चाहे प्राण चले जाएं फिर भी इसकी रक्षा सुरक्षा करनी है। दिल्ली के जेएनयू परिसर में राष्ट्रविरोधी आवाजें उठने की निन्दा करते हुए उन्होंने कहा कि आज हमारे देश में हिन्दुस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाने वाले पनप रहे हैं। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद जो सरकार बनी, उसने असंख्य बलिदानों को केवल श्रेय लेने तक ही सीमित कर दिया। इसी का नतीजा है कि आज देशद्रोह की आवाजें देश के भीतर उठ रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के समर्पण, त्याग और देश भक्ति पर किसी को शक नहीं होना चाहिए। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने से पड़ोसी को खतरा महसूस होने लगा था।

केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री मा. संतोष कुमार गंगवार ने कहा कि सेवाकुंज में हमेशा ही कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। यह स्थान सेवा भाव का प्रतीक है। सेवा मिशन काम करने का रास्ता सिखाता है। आज यहाँ राष्ट्रीय ध्वज फहराना उत्तराखण्ड के लोगों के लिए गौरव की बात है। इक्कीसवीं सदी भारत की सदी है।

देश के गौरव का प्रतीक है राष्ट्रीय ध्वज : आशीष गौतम

सेवा मिशन के अध्यक्ष आशीष गौतम ने शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय ध्वज की महत्ता शब्दों में बयां नहीं की जा सकती। यह महज एक कपड़े का कोई रंग बिरंगा टुकड़ा मात्र नहीं, बल्कि देश के गौरव का प्रतीक है। जो कोई चाहे अपमान करे, यह राष्ट्र का प्रतीक है, इसका अपमान करने वालों को सबक सिखाना चाहिए। सभी सार्वजनिक छोटे-बड़े स्थानों पर ऐसे ध्वज फहराने चाहिए। हर हिन्दुस्तानी को तिरंगे पर गर्व होना चाहिए। उत्तराखण्ड देवभूमि के साथ-साथ सैनिकों की भी भूमि है। उन्होंने कहा कि जब वे हरिद्वार आए थे, तब उनके गुरू श्रीराम शर्मा आचार्य ने यहाँ के बच्चों में संस्कारों के बीज रोपित कर उन्हें आगे बढ़ने की सीख दी।

राष्ट्रध्वज स्थापित करने से पूर्व शहीद भगत सिंह चौक रानीपुर से नगर के मध्य मार्ग से होती हुई सेवाकुंज परिसर चण्डीघाट तक ध्वज लेकर दो पहिया वाहनों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज स्थापना यात्रा निकाली गयी। यात्रा को वरिष्ठ भाजपा नेता धन सिंह रावत ने ध्वज दिखाकर रवाना किया। दिव्य प्रेम सेवा मिशन के बच्चों ने देश भक्ति पूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत किए। देश की सीमा पर हुए शहीदों के नाम ध्वज के स्थान पर सभी आगन्तुकों ने दीप जलाकर कर श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम का संचालन मिशन के संयोजक संजय चतुर्वेदी ने किया।

विशिष्टि अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री एवं सांसद डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा कि यह उन वीरों की धरती है, जहाँ औसतन एक परिवार से एक व्यक्ति सेना में भर्ती होकर देश की सीमाओं पर पहली पंक्ति में कुर्बानी देता है। ये आज से नहीं देश की आजादी से पहले के आंकड़े बताते हैं कि इस छोटे से घनत्व एवं जनसंख्या वाले प्रदेश ने देश हित में सर्वाधिक कुर्बानियां दी हैं। इस भूमि पर सौ फीट ऊँचा तिरंगा लहराकर दिव्य प्रेम सेवा मिशन ने देश को नई दिशा देने का काम किया है। इस पुनीत कार्य के लिए सेवा मिशन के सभी कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं।

इस अवसर पर डॉ. धन सिंह रावत, श्री प्रवीण शर्मा, श्री आजाद सिंह तोमर, श्री प्राणवीर सिंह, श्री विरेन्द्र सिंह, श्री महेश अग्रवाल, श्रीगोपाल, श्री महेश चतुर्वेदी, श्री पीएन पाठक, श्री कामेश्वर सिंह, कुंवर बृजेश सिंह, श्री पीयूष शास्त्री, श्री पंकज त्यागी, श्री पवन त्यागी, श्री राकेश सिंह पहलवान, श्री प्रेम चन्द्र अग्रवाल, विधायक, श्री नरेश बंशल, श्री ओम प्रकाश जमदग्नि, श्री सतीश लखेडा, श्री वैभव वर्धन, श्री रजनीकान्त, श्री विजयराज सिंह, श्री हर्ष वर्धन सिंह , श्री अमित चिरवारिया, श्री जगपाल सिंह, श्री अजीत सिंह, श्री अशोक गुप्ता, श्री आदित्य श्रीवास्तव, श्री दयाशंकर मिश्र, श्री पकंज सिंह, श्री अनिल कुमार मिश्र, श्री अभय कुमार पाल, श्री सुशील त्यागी, डॉ. अनिल त्यागी, श्री पवन नन्दन जी महाराज, डॉ. शिव शंकर जायसवाल, श्री विजय प्रकाश दीक्षित, श्री शतरुद्र प्रताप सिंह, श्री अनिल कुमार तोमर, श्री निर्भय राज सिंह बघेल, श्री चन्द्र प्रकाश शुक्ल, श्री देशबन्धु जदली, श्री राहुल चौहान, श्री शेखर यादव, श्री प्रमोद कुमार शर्मा, श्री कृष्ण कुमार सिंघल, श्री महेन्द्र विक्रम सिंह, श्री अजय सिंह, श्री अखण्ड प्रताप सिंह, श्री प्रदीप्त कुमार शाही, श्री एस.डी.सिंह परिहार, श्री प्रदीप कुमार सिंह, श्री अनिल, श्री अभय प्रताप सिंह, श्री सत्य प्रकाश सोनी, श्री अरुण प्रताप सिंह, श्री तेज बहादुर सिंह, श्री राघवेन्द्र सिंह, श्री दिनेश सिंह, श्री पाणिनी सिंह, श्री अवतार सिंह भडाना, श्री मनोज गर्ग (मेयर हरिद्वार), डॉ. जितेन्द्र सिंह, श्री प्रशान्त खरे, श्री बालकृष्ण शास्त्री, श्री विजेन्द्र प्रताप पाण्डेय, श्री विश्वास शर्मा, श्री उमाशंकर सिंह, श्री जितेन्द्र सोमवंशी, श्री अर्पित मिश्रा, श्री सुनील श्रीवास्तव, श्री राजेन्द्र राणाकोटी सहित प्रमुख मिशन कार्यकर्ता एवं गणमान्य लोग उपस्थित थे।

तिरंगा : 'राष्ट्रीय ध्वज' से जुड़े रोचक तथ्य

क्या आपने कभी ये जानने की कोशिश की है कि आखिर तिरंगा किसने बनाया?क्या आपको पता है शहीदों पर लिपटे हुए तिरंगे का क्या होता है?नहीं ना, आज हम आपको राष्ट्रीय ध्वज से जुड़े तमाम ऐसे ही सवालों के जवाब देंगे। आइए पढ़ते हैं, तिरंगे की कहानी–

- भारत के राष्ट्रीय ध्वज को 'तिरंगा' नाम से भी सम्बोधित करते हैं। इस नाम के पीछे की वजह इसमें इस्तेमाल होने वाले तीन रंग हैं, केसरिया, सफेद और हरा।
- भारत के राष्ट्रीय ध्वज में जब चरखे की जगह अशोक चक्र लिया गया तो महात्मा गांधी नाराज हो गए थे। उन्होंने ये भी कहा था कि मैं अशोक चक्र वाले झंडे को सलाम नहीं करूँगा।
- संसद भवन देश का एकमात्र ऐसा भवन है जिस पर एक साथ 3 तिरंगे फहराए जाते हैं।
- किसी मंच पर तिरंगा फहराते समय जब बोलने वाले का मुँह श्रोताओं की तरफ हो तब तिरंगा हमेशा उसके दाहिने तरफ होना चाहिए।
- राँची का 'पहाड़ी मंदिर' भारत का अकेला ऐसा मंदिर हैं जहाँ तिरंगा फहराया जाता है। 493 मीटर की ऊँचाई पर देश का सबसे ऊँचा झंडा भी राँची में ही फहराया गया है।
- क्या आप जानते हैं कि देश में 'फ्लैग कोड ऑफ इंडिया' (भारतीय ध्वज संहिता) नाम का एक कानून है, जिसमें तिरंगे को फहराने के कुछ नियम-कायदे निर्धारित किए गए हैं।
- यदि कोई व्यक्ति 'फ्लैग कोड ऑफ इंडिया' के तहत गलत तरीके से तिरंगा फहराने का दोषी पाया जाता है तो उसे जेल भी हो सकती है। इसकी अवधि तीन साल तक बढ़ाई जा सकती है या जुर्माना लगाया जा सकता है या दोनों भी हो सकते हैं।
- तिरंगा हमेशा कॉटन, सिल्क या फिर खादी का ही होना चाहिए। प्लास्टिक का झंडा बनाने की मनाही है।
- तिरंगे का निर्माण हमेशा रेक्टेंगल शेप में ही होगा। जिसका अनुपात 3: 2 ही होना चाहिए। जबकि अशोक चक्र का कोई माप तय नहीं है सिर्फ इसमें 24 तिल्लियां होनी आवश्यक हैं।
- सबसे पहले लाल, पीले व हरे रंग की हॉरिजान्टल पट्टियों पर बने झंडे को 7 अगस्त 1906 को पारसी बागान चौक (ग्रीन पार्क), कोलकाता में फहराया गया था।
- झंडे पर कुछ भी बनाना या लिखना गैरकानूनी है।
- किसी भी गाड़ी के पीछे, बोट या प्लेन में तिरंगा यूज नहीं किया जा सकता है। इसका प्रयोग किसी बिल्डिंग को ढकने में भी नहीं किया जा सकता है।
- किसी भी स्थिति में झंडा (तिरंगा) जमीन पर टच नहीं होना चाहिए।
- झंडे का यूज किसी भी प्रकार के यूनिफार्म या सजावट के सामान में नहीं हो सकता।
- भारत में बेंगलुरू से 420 किमी स्थित 'हुबली' एक मात्र लाइसेंस प्राप्त संस्थान है जो झंडा बनाने का और सप्लाई करने का काम करता है।
- किसी भी दूसरे झंडे को राष्ट्रीय झंडे से ऊँचा या ऊपर नहीं लगा सकते और न ही बराबर रख सकते हैं।
- 29 मई 1953 में भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा सबसे ऊँची पर्वत की चोटी माउंट एवरेस्ट पर यूनियन जैक तथा नेपाली राष्ट्रीय ध्वज के साथ फहराता नजर आया था इस समय शेरपा तेनजिंग और एडमंड माउंट हिलेरी ने एवरेस्ट फतह की थी।
- लोगों को अपने घरों या आफिस में आम दिनों में भी तिरंगा फहराने की अनुमति 22 दिसंबर 2002 के बाद मिली।
- तिरंगे को रात में फहराने की अनुमति सन् 2009 में दी गई।
- पूरे भारत में 21×14 फीट के झंडे केवल तीन जगह पर ही फहराए जाते हैं। कर्नाटक का नारगुंड किला, महाराष्ट्र का पनहाला किला और मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले में स्थित किला।
- राष्ट्रपति भवन के संग्रहालय में एक ऐसा लघु तिरंगा है, जिसे सोने के स्तंभ पर हीरे-जवाहरातों से जड़ कर बनाया गया है।
- अभी जो तिरंगा फहराया जाता है उसे 22 जुलाई 1947 को अपनाया गया था। तिरंगे को आंध्रप्रदेश के पिंगली वैंकैया ने बनाया था। इनकी मौत सन् 1963 में बहुत ही गरीबी में एक झोपड़ी में हुई। मौत के 46 साल बाद डाक टिकट जारी करके इनको सम्मान दिया गया।
- भारत के संविधान के अनुसार जब किसी राष्ट्र विभूति का निधन होता है व राष्ट्रीय शोक घोषित होता है, तब कुछ समय के लिए ध्वज को झुका दिया जाता है। लेकिन सिर्फ उसी भवन का तिरंगा झुका रहेगा, जिस भवन में उस विभूति का पार्थिव शरीर रखा है। जैसे ही पार्थिव शरीर को भवन से बाहर निकाला जाता है वैसे ही ध्वज को पूरी ऊँचाई तक फहरा दिया जाता है।
- देश के लिए जान देने वाले शहीदों और देश की महान शख्सियतों को तिरंगे में लपेटा जाता है। इस दौरान केसरिया पट्टी सिर की तरफ और हरी पट्टी पैरों की तरफ

होनी चाहिए। शवों के साथ तिरंगे को जलाया या दफनाया नहीं जाता बल्कि उसे हटा लिया जाता है। बाद में या तो उसे गोपनीय तरीके से सम्मान के साथ जला दिया जाता है या फिर वजन बांधकर पवित्र नदी में जल समाधि दे दी जाती है। कटे-फटे या रंग उड़े हुए तिरंगे के साथ भी ऐसा ही किया जाता है।

- पहली बार 21 अप्रैल 1996 को स्क्वाड्रन लीडर संजय थापर ने तिरंगे की शान बढ़ाते हुए एम.आई.-8 हेलीकॉप्टर से 10000 फीट की ऊँचाई से कूदकर देश के झंडे को उत्तरी ध्रुव में फहराया था।
- 1984 में विंग कमांडर राकेश शर्मा ने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को लेकर अंतरिक्ष के लिए पहली उड़ान भरी थी।
- दिसम्बर 2014 से चेन्नई में 50000 स्वयंसेवकों द्वारा मानव झंडा बनाने का विश्व रिकार्ड भी भारतीयों के ही पास है।

फहराने के नियम

- सूर्योदय से सूर्यास्त के बीच ही तिरंगा फहराया जा सकता है।
- फ्लैग कोड में आम नागरिकों को सिर्फ स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर तिरंगा फहराने की छूट थी लेकिन 26 जनवरी 2002 को सरकार ने इंडियन फ्लैग कोड में संशोधन किया और कहा कि कोई भी नागरिक किसी भी दिन झंडा फहरा सकता है, लेकिन वह फ्लैग कोड का पालन करेगा।
- 2001 में इंडस्ट्रियलिस्ट नवीन जिंदल ने कोर्ट में जनहित याचिका दायर कर कहा था कि नागरिकों को आम दिनों में भी झंडा फहराने का अधिकार मिलना चाहिए। कोर्ट ने नवीन के पक्ष में ऑर्डर दिया और सरकार से कहा कि वह इस मामले को देखे। केंद्र सरकार ने 26 जनवरी 2002 को झंडा फहराने के नियमों में बदलाव किया और इस तरह हर नागरिक को किसी भी दिन झंडा फहराने की इजाजत मिल गई।

राष्ट्रगान के भी हैं नियम

- राष्ट्रगान को तोड़-मरोड़कर नहीं गाया जा सकता।
- अगर कोई शख्स राष्ट्रगान गाने से रोके या किसी ग्रुप को राष्ट्रगान गाने के दौरान डिस्टर्ब करे तो उसके खिलाफ प्रिवेंशन ऑफ इन्सल्ट टु नैशनल ऑनर ऐक्ट-1971 की धारा-3 के तहत कार्रवाई की जा सकती है।
- ऐसे मामलों में दोषी पाए जाने पर अधिकतम तीन साल की कैद का प्रावधान है।
- प्रिवेंशन ऑफ इन्सल्ट टु नैशनल ऑनर ऐक्ट-1971 का दोबारा उल्लंघन करने का अगर कोई दोषी पाया जाए तो उसे कम-से-कम एक साल कैद की सजा का प्रावधान है।

क्या आप जानते हैं कि क्या होता है सर्जिकल हमला या सर्जिकल स्ट्राइक?

किसी के ऊपर जान बचाकर गुप्त रख के किये गये हमले को सर्जिकल स्ट्राइक कहते हैं। दरअसल, सर्जिकल स्ट्राइक में 'सरप्राइज' होता है, यानी टारगेट पर अचानक हमला कर दिया जाता है। ताकि सामने वाले को जवाब का मौका ही न मिले। यह असल में सेना द्वारा किया जाने वाला एक नियंत्रित हमला होता है, जिसमें किसी खास इलाके में पहले से तय विशेष ठिकाने पर हमला करके उसे खत्म किया जाता है। इससे सेना द्वारा बड़े पैमाने पर उस इलाके में बर्बादी को रोका जाता है और खास तरह से अटैक को डिजाइन किया जाता है। सेना की इस कार्रवाई में जहाँ ऑपरेशन को अंजाम दिया जाता है, नुकसान सिर्फ वहीं होता है। उसके आस-पास सिविलियन इलाके को कोई हानि नहीं पहुँचती है। इससे इस इलाके के सार्वजनिक इलाके की आधारभूत संरचना, परिवहन के साधन या आम जनता के उपयोग के लिए इस्तेमाल किए जा रहे साधनों को कोई नुकसान नहीं पहुँचता है। इसमें अचानक हमला किया जाता है। भारत में पहले से होती रही है इसकी तैयारी पहली बार सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक का खुलेआम ऐलान किया। नई दिल्ली मिलिटरी आपरेशन्स के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल रणबीर सिंह ने रक्षा तथा विदेश मंत्रालयों की एक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि भारतीय सैन्य बलों द्वारा नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर मौजूद आतंकी गुटों के ठिकानों पर सर्जिकल स्ट्राइक किया गया। आतंकी कैंपों को निशाना बनाया गया था।

दिव्य प्रेम सेवा मिशन संचालन समिति की बैठक 23 अक्टूबर 2016

सेवा मिशन के एक बच्चे को प्रतिवर्ष निःशुल्क चिकित्सा शिक्षा देने की घोषणा

मुम्बई में आयोजित चाणक्य मंचन कार्यक्रम में शिक्षाविद् समाज सेवी आर. पी. एन. सिंह, चेयरमैन एस. एस. आर. मेडीकल कालेज मॉरीशस ने दिव्य प्रेम सेवा मिशन के कार्यों में सहयोग के साथ सेवा मिशन द्वारा पालित कुष्ठ रोगियों के एक बच्चे को प्रतिवर्ष मेडिकल कॉलेज में निःशुल्क प्रवेश एवं चिकित्सा शिक्षा देने की घोषणा की।

हरित भारत अभियान के अन्तर्गत कुम्भ क्षेत्र में एक साथ 1100 पौधों का रोपण

राजनीति में सामाजिक जिम्मेदारी का अभाव : मधुभाई कुलकर्णी

दिव्य प्रेम सेवा मिशन सेवा मिशन एवं गंगा समग्र के तत्वावधान में हरित भारत अभियान के अन्तर्गत कुम्भ क्षेत्र चण्डीघाट, हरिद्वार में विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से 1100 पौधों का रोपण किया गया। पौधारोपण के क्षेत्र को ग्यारह सेक्टरों में विभाजित कर प्रत्येक सेक्टर में 100 पौधे रोपने का लक्ष्य संस्थाओं को दिया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मधुभाई कुलकर्णी (अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य-राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) ने कहा कि आज राजनीति में सामाजिक जिम्मेदारी का अभाव है, देश की राजनीति में सामाजिक मुद्दों से जुड़े सेवा करने वाले लोगों की जरूरत है। जो समाज के बीच जाकर परिवर्तन के लिए जागरूकता का कार्य करें। उन्होंने ग्लोबल वार्मिंग पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि वृक्ष लगाना अच्छा कार्य है। जल, जमीन और जंगलों पर प्रदूषण के दुष्प्रभाव के साथ वायुमंडल की शुद्धता के लिए वृक्षारोपण की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए लोगों से अपील की अधिक से अधिक वृक्ष लगाएं और उनका संरक्षण करें तभी हरित भारत का सपना साकार होगा। गंगा को निर्मल व स्वच्छ बनाने हेतु जन जागरण के साथ वृक्षारोपण आवश्यक है। उन्होंने दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा किए जा रहे सेवा प्रकल्पों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

प्रसिद्ध श्रीराम कथा वाचक पूज्य संत विजय कौशल जी महाराज ने कहा कि हम लोग गंगा की पवित्र गोद में बैठे हैं। यहाँ से जो संकल्प उठता है वह अवश्य पूरा होता है। धरती का श्रृंगार वृक्ष लगाकर करो। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि एक वर्ष में कम से कम दो पौधे अवश्य लगाएं। बिना वृक्ष के जीवन नहीं रह सकता है। सेवा मिशन के संयोजक श्री संजय चतुर्वेदी ने हरित भारत अभियान की जानकारी देते हुए कहा कि पूरे कुम्भ क्षेत्र में एक लाख पौधे लगाने का लक्ष्य है। इस अवसर पर श्री आशीष गौतम (अध्यक्ष-दिव्य प्रेम सेवा मिशन), श्री मिथलेश (राष्ट्रीय संगठन सचिव-गंगा समग्र), श्री ललित कपूर (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष-गंगा समग्र) ने भी सम्बोधित किया।

वृहद वृक्षारोपण में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, पतंजलि योगपीठ, शांतिकुज, प्रेमनगर आश्रम, विद्याभारती, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, विश्व हिन्दू परिषद, नमामि गंगे, भारत विकास परिषद, सेवा भारती, राष्ट्रीय सेवा योजना, संस्कार सेवा समिति, सुप्रयास कल्याण समिति, चिन्तन प्रवाह, श्रीगंगा सभा, रूद्र यज्ञ समिति, विवेकानन्द विचार मंच, शहर व्यापार मंडल, नेशनल मीडिया क्लब, आवाज जन कल्याण समिति, विश्व आयुर्वेद परिषद, संस्कृत भारती, सर्व सेवा संगठन, नेशनलिस्ट यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स, डिवाइन इण्टरनेशनल फाउण्डेशन, दिव्य भारत समिति, उषा ब्रेको लि., अंजनी देवी चैरिटेबल ट्रस्ट सहित संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने प्रत्यक्ष उपस्थित रहकर वृक्षारोपण में सहयोग किया।

कार्यक्रम में अविनाश ओहरी, डॉ. सत्यनारायण शर्मा, मयंक शर्मा, संजय रावल, ओमप्रकाश जमदग्नि, कृष्णकुमार सिंघल, डॉ. अश्वनी चौहान, सुनील अनेजा, रवीन्द्र सिंघल, अनिरूद्ध भाटी, महन्त सतीश गिरि, सन्दीप गोयल, चन्द्र प्रकाश पाल, डॉ. जितेन्द्र सिंह, बालकृष्ण शास्त्री, राजेन्द्र नाथ गोस्वामी, त्रिलोकचन्द्र भट्ट, प्रदीप शर्मा, गगनदीप यादव, प्रशांत खरे, विश्वास शर्मा, विनीत जौली, कुसुम गांधी, संजय वर्मा, विदित गोस्वामी, मधुसूदन अग्रवाल सहित सभी सहयोगी संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर संघ चालक रोहिताश्व कुंवर ने किया।

परिवार मिलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

समाज में ऐसे सेवा कार्य करने वाली संस्थाओं की आवश्यकता : सुप्रवीन

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा संचालित प्रदीप वाटिका छात्रावास द्वारा सेवाकुंज परिसर में गांधी जयन्ती के अवसर पर परिवार मिलन एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती व महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलित एवं देश के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित कर किया गया। देश के विभिन्न प्रदेशों से आए बच्चों के परिजनों ने छात्रावास में रह रहे अपने बच्चों से मुलाकात की। सभी बच्चे अपने माता-पिता एवं परिवार के सदस्यों से मिलकर बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे थे क्योंकि वर्ष में एक बार ही बच्चों को अपने माता-पिता से मिलने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस अवसर पर नेहा, सपना, आरती, अनीता, पूजा, संजू, संजना, मनीषा, ज्योति, खुशबू, सरिल, विनय, अमित, आदित्य, प्रभुदयाल, विशाल, दिव्यांशु, निखिल, आयुष, अमरजीत, आकाश, रोहित, शिवराम, संजीव, रामअवतार, राकेश, राजेश्वर सहित छात्र/छात्राओं ने एकल गीत, एकल नृत्य, सामूहिक नृत्य, पर्यावरण व गंगा स्वच्छता पर नाटक एवं योगासन सहित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

समारोह के मुख्य अतिथि हरियाणा कैडर के आईएस सुप्रवीन ने कहा कि दिव्य प्रेम सेवा मिशन के कार्यकर्ता ऐसे बच्चों के लिए कार्य कर रहे हैं जिन बच्चों को कोई छूना भी पसन्द नहीं करता है। उन्होंने कहा कि आज समाज में ऐसे सेवा कार्य करने वाली संस्थाओं की आवश्यकता है। मैं यहाँ आकर अपने आप को धन्य मान रहा हूँ कि भगवान की दिव्यता यहाँ देखने को मिल रही है।

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के अध्यक्ष श्री आशीष गौतम ने कहा कि महात्मा गाँधी एक महान व्यक्तित्व के व्यक्ति थे जिन्होंने अपना सारा जीवन दूसरों की सेवा के लिए अर्पित कर दिया। उन्होंने कहा कि हम सब भी उनके बताये हुए मार्ग पर चलें तो यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने परिवार मिलन में बच्चों के अविभावकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप लोगों ने जो बीज बच्चों के रूप में हमें सौंपा है वह निश्चित ही एक दिन वट वृक्ष बनेंगे। उन्होंने कहा कि सेवा मिशन के कार्यकर्ता आप लोगों के बच्चों को उचित संस्कार युक्त वातावरण देने में लगे हुए हैं। अध्यक्षता करते हुए भाजपा नेता कुंवर बृजेश सिंह ने कहा कि जब सेवा में दया जुड़ जाती है तो वह एहसान हो जाता है। सेवा मिशन के कार्यकर्ता आप लोगों के बच्चों को अपने परिवार का बच्चा मानकर उनकी देखरेख कर रहे हैं।

इस अवसर पर सतेन्द्र, शरद, शशि, प्रकाश, सिद्धार्थ, अमित, उमेश, विशाल, राजवीर, मुकेश, अर्जुन, सन्दीप, विकास, सुजीत खेल प्रतियोगिताओं में क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने पर तथा भाषण प्रतियोगिता में चन्दन, शुभम, मोहित को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कृत किया। समारोह में श्याम मोहन अग्रवाल, महन्त सतीश गिरि, डॉ. जितेन्द्र सिंह, डॉ. बबलू आर्य, प्रशांत खरे, विश्वास शर्मा, अर्पित मिश्रा, गगन यादव, विजेन्द्र पाण्डेय, बालकृष्ण शास्त्री, उमाशंकर सिंह, आनन्द रिछारिया, रिंकू सिंह, संतोष सिंह सहित समस्त मिशन कार्यकर्ता एवं अभिभावक व उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रधानाचार्य राजेन्द्र राणाकोटी ने किया।

स्वतंत्रता दिवस पर वृक्षारोपण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा संचालित माधवराव देवले शिक्षा मन्दिर में स्वतन्त्रता दिवस का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य अतिथि डॉ. सत्यनारायण शर्मा (संस्थापक-सुप्रयास कल्याण समिति), महन्त श्री मोहन दास (उदासीन अखाडा बडा कनखल), महन्त सतीश गिरि, महन्त सुखदेव मुनि, रवीन्द्र सिंघल, सुनील अनेजा ने संयुक्त रूप से ध्वजारोहण किया। मिशन सह संयोजक डॉ. जितेन्द्र सिंह ने स्वतंत्रता दिवस की बधाई देते हुए सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत के साथ परिचय करवाया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए महन्त मोहन दास ने कहा कि दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा सभी जाति, वर्ग की बिना भेदभाव के सेवा हो रही है। आशीष जी जो यह सेवा का कार्य कर रहे हैं इसमें समाज को बढ चढ़कर सहयोग करना चाहिए।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. सत्यनारायण शर्मा ने कहा कि हम जीवन में कभी किसी को छोटा न समझें और किसी भी सेवा के लिए तत्पर रहें। उन्होंने कहा कि आज हमारे संस्कारों व संस्कृति पर हमला हो रहा है। शिक्षा मात्र पेट भरने के लिए एवं व्यवसायिक होती जा रही है। कुछ शिक्षण संस्थाएं ही ऐसी हैं जो शिक्षा के साथ-साथ संस्कार दे रही हैं। उन्होंने कहा कि दिव्य प्रेम सेवा मिशन में भौतिक साधनों के अभाव में भी पढ़ रहे ये बच्चे किसी से कम नहीं हैं। सेवा मिशन के मीडिया प्रभारी बालकृष्ण शास्त्री ने कहा कि आज देश को गुलामी से आजाद हुए 70 वर्ष हो गये हैं लेकिन सामाजिक एवं आन्तरिक समस्याओं से देश आज भी जूझ रहा है। उन्होंने कहा कि सामाजिक विकृतियों से सभी को मिलकर लड़ना होगा तभी देश की एकता अखण्डता को हम अक्षुण्ण रख पायेंगे। मिशन के लेखाधिकारी विजेन्द्र पाण्डेय ने कहा कि आज के दिन हम सब संकल्प लें कि अपने आस-पास का वातावरण स्वच्छ रखेंगे तथा भारत सरकार के स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनायेंगे। इस अवसर पर अतिथियों द्वारा सेवा मिशन द्वारा चलाये जा रहे हरित भारत अभियान के अन्तर्गत वृक्षारोपण भी किया गया।

विद्यालय के बच्चों ने मनमोहक देशभक्ति की भावना को प्रदर्शित करते हुए अभियनय गीत, नृत्य, कविताओं सहित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी। समारोह में रवीश कुमार, राजेन्द्र नाथ गोस्वामी, मनोज मंत्री, श्रीमती मुकेश सिंह, डॉ. अलका राठौर, मंजू नेगी, संदीप कश्यप, सुनीता बिष्ट, सुमित, रूबी रावत, सुखदेव रावत, जितेन्द्र सोमवंशी, आनन्द रिछारिया सहित मिशन के समस्त कार्यकर्ता एवं बच्चों के सैकड़ों अभिभावक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक कुमार ने किया।

राज्यस्तरीय क्रीडा प्रतियोगिता में मनीष प्रथम

शीतकालीन पौड़ी जिला स्तरीय क्रीडा प्रतियोगिता में चौदह सौ छात्रों ने प्रतिभाग किया। जिसमें दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा संचालित दिव्य भारत शिक्षा मन्दिर के ग्यारह छात्रों ने यमकेश्वर ब्लाक की ओर से प्रतिभाग किया जिसमें दस छात्रों का राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिये चयन हुआ है। इस राज्य स्तरीय क्रीडा प्रतियोगिता में कक्षा सप्तम से मनीष पासवान ने चैम्पियनशिप प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्राथमिक वर्ग में कक्षा पंचम से सतेन्द्र राय ने चैम्पियनशिप प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिला शिक्षा अधिकारी कुंवर सिंह रावत ने दोनों छात्रों को ट्राफी देकर सम्मानित करते हुए कहा कि यह छात्र भविष्य में देश के सबसे अच्छे खिलाड़ी बनेंगे और उत्तराखण्ड का नाम रोशन करेंगे। विद्यालय की ओर से प्रधानाचार्य राजेन्द्र राणाकोटी, प्रीति जी, विकास जी का विशेष सहयोग रहा। अन्य छात्रों में रोशन कुमार, धर्मेन्द्र, श्रीकान्त, विकास महतो, दीपू वाबरी, शरद, सन्दीप पाल, विशाल ने प्रतिभाग किया था। छात्रों की इस शानदार उपलब्धि पर दिव्य प्रेम सेवा मिशन के अध्यक्ष श्री आशीष गौतम जी एवं संयोजक संजय चतुर्वेदी जी ने छात्रों एवं समस्त अध्यापकों को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं।

बिरला घाट पर वृक्षारोपण एवं स्वच्छता अभियान

एक वृक्ष लगाना दस पुत्रों के समान : शिवप्रताप शुक्ल

दिव्य प्रेम सेवा मिशन द्वारा चलाये जा रहे निर्मल गंगा स्वच्छ भारत अभियान के तहत दैनिक जागरण एवं दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संयुक्त तत्वावधान में बिरला घाट पर गंगा किनारे स्वच्छता एवं वृहद वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्य सभा सांसद मा. शिवप्रताप शुक्ल ने सम्बोधित करते हुए कहा कि माननीय प्रधानमंत्री की नमामि गंगे योजना में बहुत उपयोगी बातें शामिल की गयी हैं। जिसमें नदियों की सफाई और उन्हें पुनर्जीवित कैसे करें प्रमुख हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी गंगा के प्रति बहुत गम्भीर हैं इसी कारण अलग गंगा हेतु मंत्रालय बनाया गया है। उन्होंने लोगों से आवाहन किया हम सब मोदी जी की इस मुहिम से जुड़ें और देश के विकास में योगदान दें। उन्होंने नरसिंह गढ़ के राजा का उदाहरण देते हुए कहा कि वहाँ के राजा ने अपनी रियासत में नीम के पेड़ लगवाये तो वहाँ रोगों में कमी आयी। वृक्षारोपण के महत्व को बताते हुए कहा कि शास्त्रों में एक वृक्ष लगाना दस पुत्रों के समान बताया गया है। इसलिए पेड़ लगाना उसका संरक्षण करना हर दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

विशिष्ट अतिथि सीडीओ सोनिका ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों व अभियानों से समाज में जागरूकता आती है। उन्होंने कहा कि पौधा लगाना सरल है लेकिन उसकी सुरक्षा व संरक्षण करना बहुत कठिन है। प्रत्येक व्यक्ति को समाजिक जिम्मेदारी का भी निर्वहन करना चाहिए।

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के अध्यक्ष आशीष गौतम ने कहा कि जब गंगा निर्मल बहने लगेगी, हमारे पर्यटन स्थल सुन्दर व स्वच्छ होंगे तो विश्व के लोगों का भी आगमन हमारे देश में होगा। उन्होंने कहा कि वृक्षों का हमारे जीवन में बड़ा योगदान है। मानव जीवन प्रकृति की छांव के बिना सम्भव नहीं है। कार्यक्रम का संचालन नमामि गंगे के राष्ट्रीय समन्वयक संजय चतुर्वेदी ने किया।

इस अवसर पर डॉ. चन्द्र मोहन-प्रदेश प्रवक्ता,भाजपा उ.प्र., कुंवर वृजेश सिंह, अविनाश ओहरी, जगदीश पाहवा, अनिरूद्ध भाटी मंडल अध्यक्ष-भाजपा, मयंक शर्मा, हितेश शर्मा, सरिता अग्रवाल, संजना शर्मा, कामिनी सडाना, विनीत जौली, गगनदीप यादव, प्रदीप शर्मा, बालकृष्ण शास्त्री, विश्वास शर्मा, अर्पित मिश्रा, बृजेन्द्र पाण्डेय, जितेन्द्र सिंह, संतोष सिंह, विनोद श्रीवास्तव, महेश पाण्डे, राहुल गिरी, शिवांग अग्रवाल सहित सेवा मिशन के कार्यकर्ता एवं दिव्य भारत शिक्षा मन्दिर के बच्चे मौजूद रहे।

आशीष जी का जीवन और कर्म हम सबके लिए प्रेरणादायक : दिनेश उराँव

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संस्थापक/अध्यक्ष आशीष गौतम जी को झारखण्ड विधान सभा के सोलहवें स्थापना दिवस पर विधान सभा परिसर में आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। कुष्ठ रोगियों की सेवा और उनके बच्चों के पुनर्वास के लिए विशिष्ट कार्य करने के लिए विधान सभा स्पीकर दिनेश उराँव मुख्यमंत्री रघुवर दास और राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू ने आशीष गौतम को शॉल और भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा देकर सम्मानित किया। स्पीकर दिनेश उराँव ने कहा कि आशीष गौतम जी का जीवन और कर्म हम सबके लिए प्रेरणा देता है। मुख्यमंत्री रघुवर दास ने कहा कि आशीष जी जैसे लोग समाज में सेवा का जो संदेश दे रहे हैं वो आने वाली पीढ़ियों को जागृत करेगी। इस मौके पर झारखंड सरकार के सभी मंत्री, विधायक, प्रशासनिक अधिकारी और राज्य के गणमान्य लोग मौजूद थे। सम्मान मिलने पर सेवा मिशन के कार्यकर्ताओं एवं शुभ चिन्तकों ने श्री आशीष जी को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

SANSKRITI SCHOOL

(Donation is Tax exempted Under Section 35 AC of Income Tax Oct. 1961.
File No-V.27011/29/2015 Date 16 March 2016)

Introduction : The President of Divya Prem Sewa Mission Mr. Ashish Gautam a Humanitarian Thought in service, with a view to remove the Pain & Sufferings of children belonging to poor sections of the society, has established an educational institution namely Divya Prem Sewa Mission at Haridwar in Uttarakhand to enlighten the dreams of these children and enable them to lead a respectable life.

Digital Education, Breakfast & Midday Meal
Experimental Learning, Personality Development
International Curriculum, Games & Sports, Contemporary Fine Art Programs

Aim : To Expose the hidden talent of a child through effective teaching & guidance' with sincere efforts so as to enable him to become a responsible citizen of the country and a true patriot, children belonging to the rural areas where resources are limited, parents are illiterate and are also not in a position education in urban areas.

Mission : To foster a child through quality and enriched education to prepare every child to face the challenges of his/ her life. To foster the child with the spirit of fraternity devotion and sincerity so as to enable him to become a true human being. To provide purposeful education to the child in a safe and secured environment and enable him/her to take of the nature.

Policy : The Institution will impart free education to orphanage children of widows and children belonging to the poor sections of the society. All these children will be provided books. Stationeries, uniforms, transportation and lunch free of cost on behalf of the mother concern Divya Prem Sewa Mission, Haridwar. To expose the hidden talents of those children who are unable to attend the school due to poverty. To turn the child into a true humanity being enabling him to lead a respectable life. To impart education to children of rural regions in such a way that they can cope with the changing scenario and changing technology of the world.

Sankalp

I agree with the aims and objectives of Sewa Mission and want to contribute.

Cheque /DD/cash ……………………………………………………………… Date ……………………………………………

Name (Capital Letters)………

Address………

……

Company/Farm/ Institution ………………………………………………………………………………………………………

Telephone :………………………………………………………Mobile:…………………………………………………………

E-mail:………

All donations are exempted from income tax Under Section 80G , 35AC of IT Rules.
The trust is registered under Foreign Currency Registration Act [FCRA].

Divya Prem Sewa Mission Nyas (Reg.)
Bank Details
Bank Name : ICICI BANK
A/c Name : Divya Prem Sewa Mission Nyas
A/c Number : 023901002302
RTGS Coad : ICIC0000239
ICICI Bank, Branch Haridwar Uttarakhand

DIVYA PREM SEWA MISSION

Managed By-
Divya Prem Sewa Mission Trust
Office : Sewa Kunj, Chandighat, Haridwar (Uttarakhand)
Telephone : 01334-651162, 9837088910, 9219692776
E-mail: divyaprem03@gmail.com, divya_prem03@hotmail.com
Website: www.divyaprem.org, www.divyaprem.co.in

दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास (रजि.)

S.No.: Date :.........................

आप भी सहयोगी हो सकते हैं!

- ✦ 2,51000 रु. एक कक्ष का निर्माण ✦ 1,25000 रु. आजीवन संरक्षक
- ✦ 51,000 रु. सेवा मण्डल सदस्य के रूप में ✦ 21,000 रु. वार्षिक एक बालिका का संरक्षकत्व
- ✦ 18,000 रु. वार्षिक एक बालक का संरक्षकत्व ✦ 5100 रु. देकर सामान्य सदस्य के रूप में
- ✦ केन्द्रीय संचालन समिति के सदस्य के रूप में अपने परिचितों से मिशन के सेवा कार्य हेतु कम से कम 1 लाख रुपये का सहयोग कराकर

मांगलिक अक्षय निधि (अन्न क्षेत्र)

अक्षय निधि (यह राशि जीवन में एक ही बार देनी होगी) सहयोगियों को उनके द्वारा बताये गये किसी भी स्मरणीय दिवस (जन्मदिन/वर्षगांठ/पुण्यतिथि आदि) पर सेवा मिशन द्वारा प्रतिवर्ष आभार ज्ञापित किया जायेगा।
✦ 31,000 रुपए पूर्ण दिवस आहार ✦ 11,000 रुपए भोजन दोपहर या रात्रि ✦ 5100 रुपए अल्पाहार प्रात: काल या सांयकाल

नाम...

पता...

....

....

फोन : .... मोबाइल :..

ई–मेल..

जन्मतिथि.. विवाह तिथि..

विशेष दिवस..

हस्ताक्षर

बैंक विवरण

(भारत हेतु)

दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास (रजि.)

खाता धारक का नाम : दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास

खाता संख्या : 023901000105

RTGS Code : ICIC 0000 239

आई.सी.आई.सी.आई., ब्रांच हरिद्वार, उत्तराखण्ड

Bank's Details

(Only for other countries)

Divya Prem Sewa Mission Niyas (Reg.)

Bank's Details

A/c Name : Divya Prem Sewa Mission Niyas

A/c Number : 09431170000015

Branch Code : 0943 Under

RTGS Code : RTGS/NEFT HDFC 0000943

Bank Name : HDFC, Near Vishal Megha Mart, Ranipur More, Haridwar, India

सेवा मिशन को दी जाने वाली राशि आयकर अधिनियम 80G के अधीन करमुक्त है। मनीआर्डर, चैक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट **''दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास'' (Divya Prem Sewa Mission Nyas)** के नाम पर ही भेजें। सेवा मिशन विदेशी मुद्रा विनिमय अधिनियम (FCRA) में रजिस्टर्ड है।

पत्र व्यवहार का पता :
दिव्य प्रेम सेवा मिशन, सेवाकुञ्ज, चण्डीघाट, पो. कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) भारत
दूरभाष : (01334) 222211, 09837088910, 09219692776
ई–मेल : divyaprem03@gmail.com; divya_prem03@hotmail.com
वैबसाइट : www.divyaprem.co.in

आगामी कार्यक्रम

दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार के सेवा कार्यों को समर्पित

मनोज जोशी कृत

।। चाणक्य ।।

ज्वलंत ऐतिहासिक हिन्दी नाटक

18 फरवरी 2017	8 अप्रैल 2017	15 अप्रैल 2017
भायन्दर, मुम्बई	गाजियाबाद	गोरखपुर

दिव्य प्रेम सेवा मिशन के सेवा प्रकल्पों के सहायतार्थ

प्रख्यात अभिनेत्री, कुशल नृत्यांगना एवं सांसद

"हेमामालिनी" द्वारा प्रस्तुत नृत्य नाटिका

दुर्गा

8 अक्टूबर 2017

रविवार, सायं 5.00 बजे

आयोजक **दिव्य प्रेम सेवा मिशन, कानपुर इकाई**

दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास

सेवाकुञ्ज, चण्डीघाट, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत–249408

सम्पर्क करें – 9219692776, 9451818601, 9219595552

R.N.I. No. U.T.T.H.I.N./2005/14897

दिव्य प्रेम
सेवा मिशन
सेवा साधना के 21 वर्ष

दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार

सेवा को समर्पित अध्यात्म प्रेरित स्वैच्छिक सेवा संस्थान

शुभचिन्तक सदस्यता अभियान

सेवा मिशन के 21वें वर्ष में प्रवेश पर
देशभर से **इक्कीस हजार** शुभचिन्तक सदस्य बनाने
का संकल्प लिया गया है।
जिसमें आप भी सहयोगी हो सकते हैं।
रु. 1100 देकर स्वयं सदस्य बनें
और अपने परिचितों को सदस्य बनाएं।

सम्पर्क करें – 9219692776, 9451818601, 9219595552

सेवाकुञ्ज, दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास
चण्डीघाट, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत–249408
ई–मेल : divyaprem03@gmail.com वेबसाइट : www.divyaprem.co.in
/divyapremsewamissionharidwar @DivyaPremSewa

दिव्य प्रेम सेवा मिशन न्यास के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक संजय चतुर्वेदी द्वारा दि हिन्दुस्तान ऑफसैट प्रिन्टर्स, आर्यनगर, ज्वालापुर
हरिद्वार से मुद्रित तथा दिव्य प्रेम सेवा मिशन, सेवाकुंज, चण्डीघाट, पो.–कनखल, हरिद्वार–249408 (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित